''पौलुस, तुमने क्या किया?'' (21:17-26)

अब हम प्रेरितों के काम की पुस्तक के सबसे जटिल भागों में से एक अर्थात यरूशलेम के मन्दिर में पाप बलि के लिए पौलुस के भाग लेने की कहानी पर आते हैं (21:17-26)। पौलुस ने पहले ही गलतियों के नाम[1] लिखते हुए कहा था, ''इसलिए व्यवस्था मसीह तक पहुंचाने को हमारी शिक्षक हुई, कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें। परन्तु जब विश्वास आ चुका, तो हम अब शिक्षक के आधीन न रहे'' (गलतियों 3:24, 25)। उसने रोम में मसीही लोगों को लिखा था,[2] जिसमें उसने ज़ोर देकर कहा:

> सो हे मेरे भाइयो, तुम भी मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिए मरे हुए बन गए, कि उस दूसरे के हो जाओ, जो मरे हुओं में से जी उठा। ... (रोमियों 7:4)।
>
> क्योंकि हर एक विश्वास करने वाले के लिए धार्मिकता के निमित्त मसीह व्यवस्था का अन्त है (रोमियों 10:4)।

जिस व्यक्ति ने यह लिखा हो कि मसीही लोग अब व्यवस्था के अधीन नहीं हैं,कि मसीहियों को वास्तव में ''व्यवस्था के लिए मृत'' कर दिया गया है (KJV), कि ''मसीह व्यवस्था का अन्त है,'' वह ''डाकुओं की खोह'' (मत्ती 21:13) में अभी भी आठ पाप बलियों के बलिदान में भाग लेने को तैयार कैसे हो सकता है ?[3] टीकाकार ऐडम कलॉर्क ने हम में से बहुतेरों की चिंता को व्यक्त किया:

> हम इस विषय को कैसे भी समझें, इस अवसर पर याकूब और प्राचीनों, और पौलुस के व्यवहार का हिसाब लगाना बहुत ही कठिन है। लगता है कि इस कार्य में कुछ ऐसी बात जिसे हम पूरी तरह से नहीं समझते।

यह सारा मामला इतना बेमेल है कि एक विद्वान अपने संदेह को छिपा न सका:

> कोई यह भी विश्वास कर सकता है कि ... जैसे रोमियों और गलतियों की पुस्तक का लेखक मन्दिर के बाहरी आंगन में खड़ा रहा और उसने अपने आपको उन सभी छलकपटों के आगे झुका दिया जिससे उन चतुर रब्बियों ने मन्नत को बढ़ावा दिया

था, और अविश्वासी याजकों तथा लेवियों द्वारा[4] उस समय की निरर्थक उपासना पद्धति को अपने लिए कार्य करने दिया, वैसे ही अपनी मृत्यु शय्या पर कैल्विन ने परमेश्वर की पवित्र मां[5] के लिए सोने के चोगे की मन्नत मानी।

बेशक, हम में से जो लोग प्रेरितों के काम की सच्चाई व आत्मा की प्रेरणा से होने का दावा करते हैं, वे इसकी ऐतिहासिकता का इन्कार करके प्रेरितों 21:17-26 की समस्या से बच नहीं सकते। इस बात को जानने के लिए हमें संघर्ष करना ही पड़ेगा कि पौलुस ने क्या किया और उसने ऐसा क्यों किया। जी. कैम्पबेल मॉर्गन की तरह, कुछ लोगों को बचाव के लिए पौलुस के कार्यों में बहुत कम अवसर मिला है: ''मेरा मानना है कि पौलुस ने इस अवसर पर अपनी सेवकाई की सबसे बड़ी भूल की।'' दूसरी ओर, कई लोगों का मानना है कि पौलुस के व्यवहार के लिए उसकी अधिक से अधिक प्रशंसा की जानी चाहिए, जो पूरी तरह से उस शिक्षा के हर सिद्धांत के अनुरूप है, जो उसने दी।

क्योंकि पौलुस के व्यवहार के लिए लूका ने स्वयं न तो उसकी प्रशंसा की और न निन्दा, इसलिए हम दृढ़तापूर्वक अपना निष्कर्ष नहीं निकाल सकते।[6] परन्तु, उस पद को समझने और अपने जीवन में लागू करने के लिए सिद्धांतों को देखने की कोशिश का महत्व हो सकता है। इस पाठ में, हम यह निर्धारित करने की कोशिश करेंगे कि पौलुस ने *क्या* किया। अगले पाठ में, हम विचार करेंगे कि उसने यह *क्यों* किया।

संतोषजनक स्वागत (21:17,18)

हमारा पाठ पिन्तेकुस्त के पर्व से कुछ दिन पहले पौलुस और उसके साथियों के यरूशलेम में आगमन के साथ आरम्भ होता है।[7] लूका ने लिखा है, ''जब हम यरूशलेम में पहुंचे, तो भाई बड़े आनन्द के साथ हम से मिले'' (आयत 17)। ''हम'' शब्द में लूका, तीमुथियुस और कम से कम छह गैर यहूदी मसीही शामिल थे (20:4, 5)। ''भाई'' शब्द में सम्भवत: मेजबान मनासोन (21:16) और उसके घर में एकत्र हुई स्वागतकर्ता कमेटी शामिल थी।[8] जोशपूर्ण स्वागत से शायद पौलुस को कुछ चिन्ताओं से राहत दिलाने में सहायता मिली (देखिए रोमियों 15:30, 31)। NIV के अनुवाद का अर्थ ''भाइयों ने हमारा गर्मजोशी से स्वागत किया'' है।

अगले दिन, पौलुस और उसके साथ आए लोगों ने यरूशलेम की कलीसिया के अगुओं से मिलना था। उनकी यह मुलाकात स्पष्टत: यीशु के सौतेले भाई याकूब के घर[9] हुई जिसे यरूशलेम की कलीसिया का स्तम्भ माना जाता था (गलतियों 2:9)।[10] आयत 18 कहती है, ''दूसरे दिन पौलुस हमें लेकर[11] याकूब के पास गया, जहां सब प्राचीन इकट्ठे थे।''

वाक्यांश ''सब प्राचीन'' पर ध्यान दें। प्रेरितों के काम के अध्ययन में हम प्रेरितों के नेतृत्व के अस्थाई प्रबन्ध के माध्यम से प्राचीनों के नेतृत्व के स्थाई प्रबन्ध को देख चुके हैं। पहले हमने ''प्रेरितों'' के बारे में (2:42; 4:35, 37; 5:2; 8:1,14; 9:27), फिर ''प्रेरितों

और प्राचीनों'' के बारे में (15:2, 4, 6, 22, 23; 16:4) और अब केवल ''प्राचीनों'' के बारे में पढ़ा (21:18; 14:23; 20:17 भी देखिए)। मूल बारह प्रेरितों में से कोई यरूशलेम में था या नहीं, हमें इसकी जानकारी नहीं है। शायद वे अपने कमीशन अर्थात प्रभु द्वारा दी आज्ञा को पूरा करते हुए अन्य क्षेत्रों में प्रचार कर रहे थे (मत्ती 28:19; प्रेरितों 1:8)।[12] हर हाल में, वहां पर कलीसिया की निगरानी प्राचीनों के हाथ में छोड़ दी गई थी।

आवश्यक नहीं कि वाक्यांश ''याकूब के पास ... जहां सब प्राचीन'' का अर्थ यह हो कि याकूब उन प्राचीनों में से एक नहीं था। निश्चय ही इससे यह प्रमाणित नहीं होता कि ''प्राचीनों'' की तुलना में जो सहायक के रूप में काम करते थे, याकूब वहां की कलीसिया का ''अध्यक्ष'' था और उसका मण्डली पर अधिकार था। ए.सी. हरवे, द *ऐक्ट्स ऑफ़ द अपोस्टल्ज़* में पुआल इकट्ठा कर रहा था जब उसने प्रेरितों 21:18 पर यह भ्रांतिपूर्ण टिप्पणी की:

> याकूब के यरूशलेम के बिशप का पौलुस द्वारा जाकर यरूलेशम के प्राचीनों में घिरे पाने से और स्पष्ट चिह्न नहीं हो सकता। बिशप व्यवस्था को प्रेरितों से आरम्भ होने का यह सबसे स्पष्ट प्रमाण है।

चर्च ऑफ़ इंग्लैंड के इस टीकाकार के शब्द नेतृत्व पर नये नियम की शिक्षा के बारे में उसकी नासमझी की झलक देते हैं। प्रेरितों 20:17, 28 का अध्ययन करते समय हमने देखा था कि नये नियम के समयों में ''प्राचीन'' और ''बिशप'' शब्द को एक दूसरे के स्थान पर और एक ही ओहदे/कार्य के लिए प्रयुक्त किया जाता था। प्रेरितों 21:18 का अर्थ श्रीमान हरवे मानवनिर्मित उस पुरोहित तन्त्र में ढूंढ़ रहा था जो बहुत देर बाद विकसित हुआ।

मैं आपको यह भी ध्यान दिला दूं कि जरूरी नहीं कि लूका याकूब और अन्य प्राचीनों में भिन्नता कर रहा था।[13] यदि मैं लिखूं ''मैं प्राचीनों में से एक के घर गया और सभी प्राचीन वहीं थे,'' तो आप यह निष्कर्ष नहीं निकालेंगे कि जिस पहले प्राचीन का उल्लेख किया गया वह बाद में उल्लेखित प्राचीनों के समूह का भाग नहीं था। बल्कि, आप निष्कर्ष निकालेंगे कि प्राचीनों में से *एक* के घर *सभी* प्राचीन उपस्थित थे। प्रेरितों 21:18 के मामले में भी सम्भवत: यही बात है। मैं मॉर्क ब्लैक से सहमत हूं जिसने (*ऐक्ट्स, द स्प्रैडिंग फलेम* में)''याकूब और *अन्य* प्राचीनों'' की बात की।

मुझे एक आपत्ति सुनाई देती है, ''यदि याकूब उन प्राचीनों में से केवल एक था, तो केवल उसी के नाम का ही उल्लेख क्यों हुआ?'' क्योंकि यह सभा उसके घर में हुई थी और उसे सब लोग जानते थे और उसे बहुत सम्मान देते थे। ध्यान दें कि दोबारा कभी भी याकूब का नाम अकेले नहीं दिया गया। 19 से 25 आयतों में *सब* प्राचीनों के लिए हर बार इकट्ठे सर्वनाम (''उन्हें'' ''उन्होंने'' आदि) प्राचीन के रूप में इस्तेमाल हुआ है।

लूका के कहने का भाव यह था कि पौलुस ''*सभी* प्राचीनों'' से मिला। क्योंकि कुछ समस्याओं को निपटाए बिना *सभी* प्राचीन उपस्थित नहीं हो सकते थे।[14]

पौलुस के प्राचीनों के सामने आने पर, तो लूका ने केवल इतना ही कहा कि ''उसने उन्हें नमस्कार'' किया (आयत 19क)। लूका वह दृश्य पर अधिक देर नहीं दिखाया,[15] परन्तु यह समय था बहुत महत्वपूर्ण। यरूशलेम के बहुत से प्राचीनों के लिए, यह सम्भवत: पहला अवसर था कि उन्होंने अपने गैर यहूदी भाइयों में से किसी से आलिंगन किया था। यह सम्भवत: वह अवसर था जब पौलुस और उसके गैरयहूदी साथियों ने गैर यहूदियों की प्रेम भेंट यहूदी प्राचीनों ''के कदमों में'' रखी थी (देखिए 4:35)। पौलुस को दिए प्राचीनों के साधारण उत्तर से (21:20) हम मान लेते हैं कि उस चन्दे को मुख्यत: स्वीकार कर लिया गया था।[16]

एक भावोत्तेजक रिपोर्ट (21:19)

फिर, पौलुस ने ''जो जो काम परमेश्वर ने उसकी सेवकाई के द्वारा अन्यजातियों में किए थे, एक-एक करके सब बताया'' (आयत 19ख)। यूनानी तथा हिन्दी दोनों भाषाओं में यह संकेत मिला है कि पौलुस ने गैर यहूदी जगत के अपने जोखिमों को एक-एक करके बताने में काफी समय लगाया।[17] सामान्य की भांति, जो कुछ भी किया गया था उसके लिए परमेश्वर को श्रेय दिया गया। पौलुस ने ऐसा परमेश्वर को महिमा देने *और* यह ज़ोर देने के लिए किया कि उसकी सेवकाई को परमेश्वर की स्वीकृति थी। यह पहला मौका नहीं था कि पौलुस ने यरूशलेम के प्राचीनों को रिपोर्ट दी हो (15:4)। परन्तु, इस बार वह अपनी सेवकाई के प्रभाव का प्रमाण लेकर आया अर्थात वह उन दृढ़ संकल्पी जवानों गैर यहूदी जवान भाइयों की ओर इशारा कर सकता था, जो उसके साथ आए थे।

चन्दे के साथ पौलुस की रिपोर्ट ने उसकी तीसरी यात्रा के सफलतापूर्वक पूरा होने की पुष्टि कर दी थी। इस अवसर पर पौलुस की तीसरी प्रसिद्ध मिशनरी यात्रा समाप्त हो गई। पौलुस दस से अधिक वर्षों तक रोमी साम्राज्य के पूर्वी भाग में हर जगह मुख्य नगरों में मण्डलियां स्थापित करता हुआ हज़ारों मील तक गया था! यह उसकी सेवकाई के नये चरण के आरम्भ से पहले आनन्द का समय था।

दुखी करने वाली प्रतिक्रिया (21:20-22)

अपनी रिपोर्ट पर प्राचीनों की प्रतिक्रिया ने पहले पौलुस के मन को प्रसन्न और बाद में दुखी कर दिया होगा। पहले तो, ''उन्होंने यह सुनकर परमेश्वर की महिमा की,'' (आयत 20क)। उनके आरम्भिक प्रत्युत्तर में कई तथ्य सामने आते हैं: (1) उन्होंने पौलुस के काम में परमेश्वर का हाथ देखा, और (2) उन्होंने परमेश्वर की महिमा की, पौलुस की नहीं। (3) वाक्य संकेत देता है कि उनकी यह प्रशंसा कुछ देर ही रही। मैं कल्पना करता हूं कि पौलुस और गैर यहूदी भाई रोमांचित हो उठे थे; मैं उनके चेहरों पर मुस्कुराहट देख सकता हूं।

पौलुस के लिए प्राचीनों के पहले शब्द उत्साह बढ़ाने वाले भी थे। वे कहने लगे,

''हे भाई, तू देखता है।'' उनके द्वारा शब्द ''हे भाई'' का इस्तेमाल एक अच्छा संकेत था। ''हे भाई, तू देखता है, कि यहूदियों में से कई हजार[18] ने विश्वास किया है''[19] (आयत 20ख)। वे पौलुस को यह बताना चाहते थे कि परमेश्वर केवल गैर यहूदियों में ही नहीं, बल्कि यहूदियों में भी काम कर रहा है। थोड़ी देर पहले, पौलुस ने अपने देशवासियों के लिए अपनी चिन्ता के बारे में भी लिखा था (रोमियों 9:1-3)। हज़ारों यहूदियों के बारे में सुनकर जो मसीही बन गए थे, उसका मन अवश्य ही खुशी से झूमने लगा होगा।

शीघ्र ही उसे जमीन पर पटककर कुचल दिया गया क्योंकि प्राचीनों ने उसकी तरह सकारात्मक निष्कर्ष नहीं निकाला था। आप में से बहुत से लोग पौलुस के साथ अपने आपको मिला सकते हैं। शायद आपने तो वही विचार प्रस्तुत किया होगा, जो आपको महान लगता था। पहले जब आपके आत्मविश्वास को सकारात्मक ढंग से मान लिया गया, तो आप गर्व महसूस करने लगे। फिर बीच में ''परन्तु'' आ गया, और आपकी हवा निकल गई। इन प्राचीनों ने अपने प्रत्युत्तर में ''परन्तु'' शब्द का इस्तेमाल नहीं किया, लेकिन उन्होंने व्यवहार ऐसा ही किया।[20]

प्राचीनों ने आगे कहा: ''और सब [हज़ारों यहूदी मसीही] व्यवस्था के लिए धुन लगाए हैं'' (आयत 20ग)। इन शब्दों ने पौलुस को अवश्य ही बेचैन कर दिया होगा। पौलुस यह जानता था कि व्यवस्था के लिए धुन लगाने का क्या अर्थ था। उत्तम शिक्षा पाने से पहले वह भी व्यवस्था के लिए धुन लगाए हुए था (गलतियों 1:14; फिलिप्पियों 3:5-9)। ''परिवर्तित'' फरीसी, जिन्होंने पहले व्यवधान डाला था अब, व्यवस्था के प्रति धुन लगाए हुए थे (प्रेरितों 15:5)। शायद पौलुस हैरान था, ''इसका गैर यहूदियों में मेरी सेवकाई और यरूशलेम में मेरे होने के उद्देश्य से क्या सम्बन्ध है?''

प्राचीनों ने पौलुस के बारे में फैली अफवाहों के बारे में बात की। अफवाहें धोखा देने वाली होती हैं। शेक्सपियर ने उन्हें ''घृणित कानाफूसी'' कहा था। घोड़ों के एक मालिक ने एक तेज घोड़े का नाम ''अफवाह'' रख दिया। जब उससे पूछा गया कि उसने अपने घोड़े का नाम ऐसा क्यों रखा, तो उसने खीझकर कहा, ''क्योंकि अफवाहों की चाल बड़ी तेज होती है।'' पौलुस के बारे में जो अफवाह फैली थी वह यह थी: ''और उनको [विश्वास करने वाले यहूदियों को] तेरे विषय में सिखाया गया है,[21] कि तू अन्यजातियों में रहने वाले यहूदियों को मूसा से फिर जाने के लिए सिखाता है और कहता है, कि न अपने बच्चों का खतना कराओ और न रीतियों पर चलो'' (आयत 21)।

बहुत सी अफवाहों की तरह, इस में भी कुछ सच्चाई थी परन्तु उसका सार गलत था। पौलुस ने ज़ोर दिया था कि यहूदी हो या गैर यहूदी कोई भी मूसा की व्यवस्था से धर्मी नहीं ठहर सकता (रोमियों 3:20; गलतियों 2:16; 3:11; 15:4) और खतने का उद्धार से कोई सम्बन्ध नहीं (रोमियों 2:25-29; गलतियों 5:6); परन्तु उसने यहूदियों को अपना यहूदीवाद छोड़ने के लिए मनाने का कोई अभियान *नहीं* चलाया था।[22]

यहूदी मसीहियों द्वारा अपनी राष्ट्रीय धरोहर के रूप में यहूदी ''परम्पराओं'' का पालन करने में उसे कोई आपत्ति नहीं थी जब तक कि वे सच्चाई से उलझती नहीं (देखिए मत्ती

15:3) और जब तक गैर यहूदियों को उन परम्पराओं का पालन करने के लिए मजबूर नहीं किया जाता।[23] खतने के बारे में, उसने तीमुथियुस का खतना करवाने पर ज़ोर इस आशा से दिया कि वह जिन यहूदियों तक पहुंचना चाहता था उन्हें ठोकर न लगे (प्रेरितों 16:3[24])। विश्वास न करने वाले यहूदियों के बारे में उसकी स्पष्ट नीति थी ''मैं यहूदियों के लिए यहूदी बना कि यहूदियों को खींच लाऊं, जो लोग व्यवस्था के अधीन हैं उनके लिए मैं व्यवस्था के आधीन न होने पर भी व्यवस्था के आधीन बना, कि उन्हें जो व्यवस्था के आधीन हैं, खींच लाऊं'' (1 कुरिन्थियों 9:20)।

अफवाह सच्ची नहीं थी और प्राचीनों को *पता था* कि यह झूठी है।[25] फिर भी, प्राचीनों ने जो कुछ देखा उसमें अपनी दुर्दशा ब्यान कर दी: ''क्या किया जाए? लोग अवश्य सुनेंगे, कि तू आया है'' (आयतें 21ख, 22)।[26] यहां लोग यरूशलेम के विश्वास करने वाले यहूदियों को कहा गया है (आयत 20)। पिन्तेकुस्त का दिन, जो सप्ताह का पहला दिन होता था, निकट था और शायद कुछ घण्टे बाद आने वाला था। सप्ताह का पहला दिन आने पर, क्षेत्र के सभी मसीही रोटी तोड़ने के लिए इकट्ठे होते होंगे (20:7[27])। प्राचीन यह पूछ रहे थे, ''इन हज़ारों लोगों के आने पर, जो पहले ही उन बातों से परेशान हो गए थे जो उन्होंने सुनी थीं, पौलुस और उसके गैर यहूदी साथियों को वहां देख लेंगे, तो हम क्रोध भड़कने और हिंसा फैलने से कैसे रोक सकते हैं?''

प्राचीनों के लिए *परमेश्वर* से पूछने का यह सबसे अच्छा समय होगा ''फिर, क्या किया जाए?'' कोई संकेत नहीं है कि उन्होंने ऐसा किया। वे पौलुस से पूछ सकते थे कि उन्हें वह अपना विचार बताए कि *क्या* करना चाहिए, परन्तु उन्होंने उससे नहीं पूछा।[28]

यदि उन्होंने मुझसे पूछा होता कि, ''फिर, क्या किया जाए?'' तो मैं उन्हें यह बताने का प्रयत्न करता कि वे परमेश्वर के नियुक्त अगुओं की तरह काम करने लगें और अपना कर्त्तव्य निभाएं! जॉन वैसली ने ऐसा ही विचार व्यक्त किया था जब उसने कहा, ''याकूब को चाहिए था कि यहूदी मसीहियों को बता दे: 'मैं व्यवस्था का पालन नहीं करता; न ही पतरस; और न ही तुम में से किसी और को करने की आवश्यकता है।' '' लॉयड ओगिल्वी ने प्राचीनों में नेतृत्व की कमी पर अपना आश्चर्य प्रकट किया, जब उसने लिखा, ''क्या किसी ने नहीं कहा, 'बस इतना ही काफी है! हमें अपने भाई पौलुस पर विश्वास है और हम जानते हैं कि ये अफवाहें झूठी हैं। उसकी सेवकाई की और आलोचना नहीं की जाएगी। हमें विश्वास है कि इस प्रेरित ने उन बातों को निष्ठापूर्वक पूरा किया है जिन पर हम एकमत हैं'?''

चौंकाने वाली सिफ़ारिश (21:23-25)

प्राचीनों ने अपना प्रश्न केवल जानकारी के लिए ही नहीं, बल्कि पूर्वनिर्धारित कार्यक्रम का मंच तैयार करने के लिए किया था। स्पष्ट है कि उन्होंने समय से पहले इस बात की चर्चा की थी और अपनी योजना को तैयार करके वे याकूब के घर आए थे। उनके ''समाधान''

का उनसे कुछ भी सम्बन्ध नहीं था बल्कि *पौलुस* से था कि वह इस मामले को सम्भाले। उन्होंने उसे बताया, ''इसलिए जो हम तुझे कहते हैं, वह कर'' (आयत 23क)। यह उनका सुझाव नहीं बल्कि आज्ञा थी।[29]

उनकी आज्ञासूचक ''सिफ़ारिश'' थी: ''हमारे यहां चार मनुष्य हैं, जिन्होंने मन्नत मानी है। उन्हें लेकर उनके साथ अपने आपको भी शुद्ध कर; और उनके लिए खर्चा दे, कि वे सिर मुंडाएं'' (आयतें 23ख, 24क)। अनुमान से, जिन चार व्यक्तियों का यहां उल्लेख हुआ है वे यरूशलेम की कलीसिया के सदस्य थे।[30] जिस मन्नत का यहां हवाला दिया गया है उसे आमतौर पर नाज़ीरी मन्नत कहा जाता है, क्योंकि इन पुरुषों ने सिर मुंडाने थे।[31]

नाज़ीरी की मन्नत न्यारा होने और समर्पण की थी। यह मन्नत तीस दिन से लेकर जीवन भर के लिए हो सकती थी।[32] इस मन्नत में बाल काटने, अंगूरों की उपज के किसी प्रकार के फल और लाशों से दूर रहा जाता था (गिनती 6:2-8)। हमारे पाठ की आयत 26 ''शुद्ध होने के दिन'' की बात करती है और आयत 27 स्पष्ट तौर पर उन्हें ''वे सात दिन'' कहती है, इसलिए बहुत से लोगों का विचार है कि इन चार लोगों ने अपने आपको एक लाश से अशुद्ध कर लिया था, जिसके लिए सात दिनों की शुद्धि का समय जरूरी था, जिसके बाद उन्हें अपने सिर मुंडाकर फिर से अपनी मन्नत को नये सिरे से आरम्भ करना था (गिनती 6:9-12)। शुद्धीकरण के उस समय में काम करने से परहेज और बलि के लिए खर्च आने वाला धन भी शामिल था। ये प्राचीन सुझाव दे रहे थे कि सारे खर्च के लिए पौलुस ज़िम्मेदार होगा।[33]

पौलुस का अपना शुद्धीकरण सम्भवत: एक सादे समारोह में मन्दिर में उसे जाने की अनुमति के लिए था।[34] उन चारों के शुद्धीकरण के समय पौलुस का शुद्धीकरण की प्रक्रिया में जाना (प्राचीनों के विचार से) व्यवस्था के प्रति पौलुस के समर्पण को दिखाता है।

उस मन्नत के विवरण में जाने या यह जानने की कोई आवश्यकता नहीं है कि प्रेरितों 21:23-27 में ठीक-ठीक क्या हुआ।[35] जहां तक हमारे अध्ययन का सम्बन्ध है, नाज़ीर की मनन्त का महत्वपूर्ण पहलू यह है कि इसमें बलिदान होते थे, जिसमें *पाप बलि* भी शामिल थी। किसी व्यक्ति द्वारा अपने आपको शुद्ध करने के बाद, उस मन्नत को फिर से बहाल करने के लिए याजक के पास दो पंडुक या कबूतरी के बच्चे लाने होते थे, ''और याजक एक की पाप बलि, और दूसरे की होम बलि करके उसके लिए प्रायश्चित'' करता था ''क्योंकि वह पापी ठहरा'' था (गिनती 6:11)। अन्त में जब मन्नत पूरी हो जाती, तो अन्य बलिदानों के साथ उसे ''एक निर्दोष भेड़ का बच्चा *पाप बलि करने के लिए*'' (गिनती 6:14) लाना होता था।

पौलुस को उन चार लोगों का खर्चा देने का ''परामर्श'' देने के बाद प्राचीनों ने कहा, ''तब सब जान लेंगे, कि जो बातें उन्हें तेरे विषय में सिखाई गईं, उनकी कुछ जड़ नहीं है परन्तु तू आप भी व्यवस्था को मानकर उसके अनुसार चलता है'' (आयत 24ख)। क्या याकूब को थोड़ी शर्म आई, जब उसने अन्य प्राचीनों के साथ मिलकर उसे ''व्यवस्था को पूरा करने'' की बात कही ? आठ या दस वर्ष पहले, यरूशलेम में एक विशेष सभा के दौरान

जब प्रेरितों ने व्यवस्था को ''ऐसा जुआ ... जिसे न हमारे बाप दादे उठा सके थे और न हम उठा सकते'' (15:10ख) कहा था तो याकूब और प्राचीनों ने पतरस के साथ सहमति जताई थी।[36] अब वे पौलुस से ''कह रहे'' थे कि वह अपने साथी मसीहियों को समझाए कि वह अभी भी उस असहनीय जुए के प्रति वचनबद्ध था और उसे उठाने को तैयार है!

स्पष्टत: प्राचीनों ने यह महसूस किया कि उनका यह प्रस्ताव उनकी पहली सभा में लिए गए निर्णय से पीछे हटना माना जा सकता है, क्योंकि उन्होंने जल्दी से यह पुष्टि कर दी थी कि वे उस निर्णय को मानते हैं: ''*परन्तु उन अन्यजातियों के विषय में जिन्होंने विश्वास किया है,* हमने यह निर्णय करके लिख भेजा है कि वे मूरतों के साम्हने बलि किए हुए मांस से, और लोहू से, और गला घोंटे हुओं के मांस से, और व्यभिचार से बचे रहें'' (21:25)। (15:20, 29 भी देखिए।)[37] अन्य शब्दों में: ''हमारी बिनती में वे अन्यजाति मसीही शामिल नहीं हैं। पौलुस को जो कुछ करने के लिए हम कह रहे हैं वह केवल यहूदियों से बनने वाले मसीहियों के लाभ के लिए है।''

मैं यरूशलेम के प्राचीनों से सहानुभूति रख सकता हूं। यहूदी धर्म के गढ़ में रहते हुए उनके सामने यह लगभग एक असम्भव कार्य था। सामान्यत: यहूदी अपने धर्म और जाति में कभी भिन्नता नहीं करते।[38] यह बात बाइबल के दिनों में भी सत्य थी; और आज भी है। औसत यहूदी को व्यवस्था को छोड़ने के लिए कहना उसे यहूदी मत छोड़ देने को कहने के बराबर था (और है)। निस्संदेह प्राचीनों ने विचार किया, ''यदि हम व्यवस्था के विरोध में बोलते हैं, तो मण्डली में हमें कठिनाई आएगी, और हम अपने मित्रों तथा पड़ोसियों को कभी भी प्रभावित नहीं कर पाएंगे।''

दूसरी, मैं यह सोचे बिना नहीं रह सकता कि यरूशलेम के प्राचीन अपने समाज और कलीसिया में व्यवस्था को लागू करने वाले धड़े की कुछ अधिक ही मान रहे थे (15:5; गलतियों 2:11, 12)। मुझे संदेह है कि इन प्राचीनों ने उस आक्रमणकारी प्रचार को बढ़ावा दिया जिसे हर जगह यहूदी आराधनालय में पौलुस करता था अर्थात जिस प्रचार से उसे उन आराधनालयों में मार पड़ी (और निकाल दिया गया) (ध्यान दें 2 कुरिन्थियों 11:24)।[39] सच्चाई से समझौता किए बिना ''सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप'' (रोमियों 12:18ख) रखने की चुनौती आसान नहीं है (नीतिवचन 23:23)। न तो यह यरूशलेम में आसान थी; न ही वहां आसान है जहां आप रहते हैं।

हैरान करने वाला परिणाम (21:26, 27)

प्राचीनों द्वारा यह बताने के बाद कि उसे क्या करना चाहिए, पौलुस ने क्या उत्तर दिया? क्या उसने विरोध किया, ''तुम मुझे आदेश देने वाले होते कौन हो?'' क्या उसने यह ऐलान किया कि ''तुम इस मण्डली के अगुवे हो। इस मामले को निपटाना तुम्हारी ज़िम्मेदारी है, मेरी नहीं''? क्या उसने आपत्ति की, ''यह सत्य है कि विशेष परिस्थितियों में मेरी नीति 'व्यवस्था के अधीन' होने की है, परन्तु वह नीति *विश्वास न करने वाले* यहूदियों को मसीह

में लाने के लिए है,[40] यहूदी मसीहियों को संतुष्ट करने के लिए नहीं''? क्या उसने यह ध्यान दिया कि प्रस्तावित कार्य को करना व्यवस्था थोपने वालों द्वारा (प्रेरितों 15:5) इस ''प्रमाण'' के रूप में इस्तेमाल किया जाएगा कि पौलुस उनके साथ सहमत था?

प्राचीनों ने पौलुस को एक कोने में धकेल दिया था। वह यरूशलेम के भाइयों में मेल बढ़ाने के लिए आया था, परन्तु ये प्राचीन उसे बता रहे थे कि उसके आने से फूट बढ़ी है। वह जीतने की स्थिति में नहीं था। यदि वह प्राचीनों की योजना को मानने से इन्कार कर देता, तो उस पर कलीसिया में फूट को बढ़ावा देने का आरोप लग सकता था; यदि वह उनके प्रस्ताव को मान लेता, तो उस पर विरोध करने का आरोप लगता।

लूका ने प्राचीनों की योजना के प्रति पौलुस के मानसिक या मौखिक प्रत्युत्तर को दर्ज नहीं किया। उसका उद्देश्य उन घटनाओं को संक्षिप्त रूप से लिखना था जिनके कारण पौलुस की गिरफ्तारी हुई। उसने हैरान करने वाली घटना के बारे में बताया जिसकी व्याख्या नहीं की जा सकती: ''तब पौलुस उन मनुष्यों को लेकर,[41] और दूसरे दिन उन के साथ शुद्ध होकर मन्दिर में गया,[42] और बता दिया, कि शुद्ध होने के दिन, अर्थात उन में से हर एक के लिए चढ़ावा चढ़ाए जाने तक के दिन कब पूरे होंगे'' (21:26)।

इन चार लोगों को मन्दिर में जाने की तब तक अनुमति नहीं मिलनी थी जब तक उनके शुद्धीकरण के सात दिन पूरे नहीं हो जाते, परन्तु पौलुस के विधिपूर्वक शुद्धीकरण के लिए एक या इससे अधिक दिन लग जाने थे।[43] वह उनकी ओर से उनके शुद्धीकरण के दिनों के अन्त में दिए जाने वाले बलिदानों का प्रबन्ध करने के लिए मन्दिर में जा सकता था।

अन्य तथ्यों पर ध्यान दिया जाना चाहिए: (1) पौलुस ने जो आरम्भ किया था उसे पूरा नहीं किया। अगली आयत ध्यान दिलाती है कि ''*जब वे सात दिन पूरे होने पर थे* तो आसिया के यहूदियों ने पौलुस को मन्दिर में देखकर सब लोगों को उकसाया, और यों चिल्लाकर उस को पकड़ लिया'' (आयत 27)। गैर-मसीही यहूदियों ने पौलुस को बलिदान भेंट करने से पहले ही पकड़ लिया (बलिदान सात दिनों के *अन्त* में आए)। क्या वास्तव में पौलुस को लहू के बलिदान में योगदान देने से दूर रखने में परमेश्वर का कोई हाथ था? यह एक दिलचस्प विचार है। (2) प्राचीनों को आशा थी कि समस्या हल हो जाएगी, परन्तु पौलुस के कार्य ने मुश्किल को और बढ़ा दिया। हम यह नहीं जानते कि मन्दिर में उसके जाने से यहूदी विश्वासियों को आसानी हुई या नहीं[44] परन्तु इतना जरूर जानते हैं कि उसके ऐसा करने से यहूदी अविश्वासी क्रोधित हो उठे, जिसके कारण उसे जेल जाना पड़ा।

सारांश

अगले पाठ में, हम यह समझने की कोशिश करेंगे कि पौलुस प्राचीनों की बात मानने के लिए सहमत *क्यों* हुआ और क्या उसने सही किया या गलत। परन्तु, चाहे पौलुस सही था या गलत, हम इस पद से कई सबक ले सकते हैं:

हम कलीसिया में सम्बन्धों के बारे में सबक ले सकते हैं: पहला, एक सदस्य सभी

सदस्यों को प्रभावित करता है। दूसरा यह कि चाहे कुछ भी कर लो, आप हर एक को प्रसन्न नहीं कर सकते। तीसरा यह कि कोई न कोई ऐसा रह ही जाता है जो बुराई पर विश्वास करता है और बुराई पर विश्वास करके अपने विश्वास को दूसरों में फैलाता है। उन नकारात्मक विचारों के साथ निपटना पौलुस का उदाहरण है, जिसे उन बातों की चिन्ता होती थी जिसका दूसरे लोग विचार करते थे और कलीसिया में एकता के लिए जो भी करने की आवश्यकता थी, वह करने को तैयार था। हम पौलुस से सीख सकते हैं कि कलीसिया में पाई जाने वाली त्रुटियों के बावजूद इससे प्रेम कैसे किया जाए।

हम उपदेश देने और लेने के बारे में भी सबक सीख सकते हैं: एक ओर तो, हमें उपदेश देने में सावधान रहना चाहिए; जिस बात से हमारे जीवन प्रभावित नहीं होते उसके लिए दूसरों को बताना कि उन्हें क्या करना चाहिए, बहुत आसान है। शायद ही प्राचीनों ने पौलुस पर दबाव डालने के लिए कभी खेद व्यक्त किया हो। अगले पांच सालों में, क्या उनमें से किसी ने भी कहा, ''यदि हम ऐसा न करते, तो पौलुस जेल में न होता। वह बाहर कहीं सुसमाचार का प्रचार कर रहा होता''? दूसरी ओर, हमें उपदेश लेने में सावधान रहना चाहिए। हर उपदेश को दो जगह अर्थात आत्मा की प्रेरणा से दी गई परमेश्वर की सच्चाई तथा सम्भावित परिणामों को व्यावहारिक तराजुओं में तौलना चाहिए।

शायद, यह भाग परमेश्वर की बुद्धि और परमेश्वर के अनुग्रह के विषय में हमें महत्वपूर्ण सबक दे सकता है: पौलुस ने गलती की या नहीं, परमेश्वर ने अपनी योजनाओं और उद्देश्यों को पूरा करने के लिए उस स्थिति का इस्तेमाल किया। अगली घटना ने उस भविष्यवाणी को पूरा किया कि यरूशलेम में गिरफ्तारी पौलुस की प्रतीक्षा कर रही थी। (20:22, 23) और इससे घटनाओं की वह शृंखला शुरू हुई जो बाद में पौलुस के रोम पहुंचने का कारण बनी। यह जानकर संतोष होता है कि जब हमारे उद्देश्य शुद्ध हों और हमारे मन उस पर लगे हों, तो परमेश्वर हमारे जीवनों में तब भी कार्य कर सकता है जब हम निर्णय लेने में गलती करते हैं। यह विचार करके कि मैंने कितनी बार गलतियां की हैं, मैं धन्यवाद देता हूं कि मैं एक अनुग्रहकारी परमेश्वर का सेवक हूं!

पाद टिप्पणियां

[1]जैसे ''प्रेरितों के काम, भाग-3'' में प्रेरितों 15 पर चर्चा में हमने ध्यान दिया था, हम पक्का नहीं कह सकते कि गलतियों की पुस्तक कब लिखी गई थी, परन्तु यह पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा से कुछ पहले लिखी गई होगी। [2]जैसे ''प्रेरितों के काम, भाग-4'' के ''निर्धनों को स्मरण रखें'' पाठ में ध्यान दिया गया था, रोमियों की पत्री पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा के अंत के निकट कुरिन्थुस से लिखी गई थी। [3]गिनती 6:11, 14. जैसे कि हम देखेंगे, इन चार व्यक्तियों ने नाज़ीरी मन्नत मानी हुई थी। शुद्धीकरण के बाद प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक पाप बलि और मन्नत के पूरा होने पर प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक होम बलि आवश्यक थी। चार का दो गुना आठ होता है। [4]जॉन कैल्विन एक जोशीला सुधारक था जिसने कैथलिक चर्च के साथ झगड़े में जीवन लगा दिया। [5]ए. हाउसरथ के नाम, यह वाक्य रिचर्ड लौंगनैकर, *पॉल, अपोस्टल ऑफ़ लिबर्टी* में उद्धृत किया गया था। [6]हमारे कार्य की चुनौती को हार्डिंग यूनिवर्सिटी में प्रेरितों के काम पर 1989 की लेक्चरशिप से चित्रित किया जा सकता है। लेक्चरशिप की पुस्तक से (*ऐक्ट्स, द स्प्रेडिंग फ्लेम* [सरसी,

आर्क.: हार्डिंग यूनिवर्सिटी, 1989]), एक वक्ता ने कहा कि पौलुस ने सही किया, जबकि दूसरे वक्ता ने कहा कि पौलुस ने गलत किया। दोनों प्रचारकों को विश्वासी लोगों में पूरा सम्मान प्राप्त है। [7]पिन्तेकुस्त का दिन सप्ताह के पहले दिन आता था (''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पृष्ठ 49 पर प्रेरितों 2:1 पर नोट्स देखिए), इसलिए वहां के मसीही रोटी तोड़ने के लिए पहले दिन इकट्ठे हुए होंगे (''प्रेरितों के काम, भाग-4'' के पाठ ''परिवार की तस्वीर'' में प्रेरितों 20:7 पर नोट्स देखिए)। परन्तु, हमारे पाठ की आयत 22 का अर्थ है कि वहां पर अभी मसीही लोग इकट्ठे नहीं होते थे (बाद में इस पाठ में आयत 22 पर नोट्स देखिए)। इसलिए, हम निष्कर्ष निकालते हैं कि पौलुस पिन्तेकुस्त के दिन से थोड़ा पहले पहुंचा। [8]मुझे लगता है कि आयत 17 में कही बात वैसे ही है, परन्तु यह भी सम्भव है कि इस आयत में याकूब के घर पहले इकट्ठे होने की बात की गई हो, जबकि आयत 18 दूसरी सभा की बात करती हो जिसमें सभी प्राचीन उपस्थित थे। [9]यरूशलेम में रह जाने वालों में सम्भवत: याकूब अकेला था जिसने कई वर्ष पूर्व पौलुस से ''निर्धनों को स्मरण रखने'' के लिए कहा था (गलतियों 2:9, 10), अर्थात उसकी बिनती के कारण पौलुस ने अन्यजाति कलीसियाओं से चंदा लेना आरम्भ किया था। पौलुस के लिए चंदा याकूब के पास ले जाना स्वाभाविक ही होगा। [10]''प्रेरितों के काम, भाग-3'' के पृष्ठ 124 पर पाद टिप्पणी 29 देखिए।

[11]लूका ने रोम में पौलुस की समुद्र यात्रा से पहले यहां अंतिम बार प्रथम पुरुष का प्रयोग किया (27:1)। ऐसा शायद लूका ने अकेले पौलुस पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए किया। परन्तु, लूका पौलुस के साथ रोम में गया था, इसलिए सम्भवत: वह कैसरिया में पौलुस के कारावास के दो वर्षों में अधिकतर या सारा समय फलस्तीन में ही रहा। इस समय उसने सम्भवत: यीशु के जीवन तथा कलीसिया के आरम्भिक दिनों पर दोहरा खोज कार्य किया (लूका 1:3)। [12]प्रेरितों के सारे संसार में जाने, सुसमाचार का प्रचार करने और कलीसिया की स्थापना करने के बारे में बहुत सी आरम्भिक परम्पराएं हैं। [13]इस बात का संकेत अंग्रेज़ी अनुवाद NASB में ''याकूब'' और ''और सब प्राचीन'' में अल्पविराम देकर दिया है। इस विराम को मूल शास्त्र तथा अंग्रेज़ी अनुवाद में भी देखा जा सकता है। [14]सभी प्राचीनों के उपस्थित होने की बात का विचार याकूब का था या पौलुस का? मैं मान लेता हूं कि दोनों यही चाहते थे कि प्राचीन वहां हों; पौलुस चाहता होगा कि चंदा प्रस्तुत किए जाने के समय सभी प्राचीन वहां उपस्थित हों। याकूब चाहता होगा कि इस ''सुझाव'' को कि मन्नत मानने वाले चार लोगों का खर्चा पौलुस उठाए समर्थन देने के लिए प्राचीन वहां हों। [15]उसके दिमाग़ में और भी कई उद्देश्य थे; वह चाहता था कि उसके पाठक पौलुस की गिरफ्तारी की पृष्ठभूमि को समझ लें। [16]पौलुस की आशा के अनुरूप यहूदी-अन्य जाति सम्बन्ध सुधरे या नहीं, हम नहीं जानते। सुझाव दिया गया है कि लूका ने चंदे के विषय में इसलिए नहीं बताया क्योंकि इससे पौलुस का उद्देश्य पूरा नहीं हुआ; अर्थात, चंदे की बात सफल नहीं हो पाई थी। परन्तु, उसी तर्क का प्रयोग करते हुए, हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि लूका ने पौलुस की पत्रियों का उल्लेख नहीं किया, इसलिए वे सभी एक असफलता हैं। हम यह टिप्पणी कर सकते हैं कि लूका ने उसी बात का उल्लेख किया जिससे उसका उद्देश्य सफल होना था और जिन बातों से उसका उद्देश्य पूरा नहीं होता था, उनका उल्लेख उसने नहीं किया। [17]पौलुस ने पहली यात्रा के बाद यरूशलेम के प्राचीनों को अपनी रिपोर्ट दे दी थी (15:4), इसलिए इस रिपोर्ट में सम्भवत: केवल दूसरी और तीसरी यात्राओं की बात ही कही गई थी। यदि 18:22 वाली ''कलीसिया'' यरूशलेम की कलीसिया है, तो इस रिपोर्ट में केवल तीसरी यात्रा की बात होगी। [18]यूनानी में मूलत: ''लाखों'' है। [19]हमें नहीं मालूम कि प्राचीन यरूशेलम में रहने वाले मसीही यहूदियों, फलस्तीन में रहने वालों या पर्व के दिन यरूशलेम आने वाले सभी मसीही यहूदियों की गिनती मिला रहे थे। [20]कई अनुवादक प्राचीनों के परमेश्वर की महिमा करने और ''फिर'' शब्द के साथ पौलुस को उनके उत्तर में भारी परिवर्तन का संकेत देते हैं: ''फिर उन्होंने उसे कहा। ...'' स्पष्टतया, प्राचीनों ने पौलुस की बात आधी ही सुनी थी; बाद की घटनाओं से पता चलता है कि वे सभा से पहले उन्होंने ठान लिया था कि क्या करना है।

[21]''उनको ... सिखाया गया है'' वाक्यांश उस यूनानी शब्द का अनुवाद है जिससे हमें अंग्रेज़ी शब्द ''Catechize'' मिलता है। अफवाह इतनी बार दोहराई गई थी कि उनके दिमाग़ में घर कर गई थी। सुसमाचार

के प्रचारकों के बारे में बहुत सी ऐसी घृणित अफवाहें दूसरे लोगों के निष्कर्ष के आधार पर फैलाई जाती हैं, जिनकी वास्तव में उन प्रचारकों ने बात नहीं की होती। [22]अफवाह का आधार यह था पौलुस की बात पर लोगों का क्या कहना था, न कि यह कि पौलुस ने क्या कहा था। [23]''प्रेरितों के काम, भाग-3'' के पाठ ''नई टीम-और उसके आगे'' में 16:1-5 पर नोट्स देखिए। [24]''प्रेरितों के काम, भाग-3'' के पाठ ''नई टीम और उसके आगे'' में 16:3 पर नोट्स देखिए। [25]इस तथ्य का कि अफवाह झूठी थी यह अर्थ नहीं था कि यह खतरनाक थी, जैसे कि पौलुस अच्छी तरह जानता था। जब यरूशलेम में यह बात फैली थी कि यीशु की शिक्षा देकर स्तिफनुस वहां की रीतियों को बदल देगा (प्रेरितों 6:14), तो स्तिफनुस को मरना पड़ा था और उसकी हत्या करने में पौलुस ने हत्यारों की सहायता की थी। [26]वैस्टर्न टैक्स्ट में है, ''फिर क्या करें? सभा इकट्ठी तो होगी ही, क्योंकि उन्हें पता चलेगा कि तू आया है।'' KJV तथा हिन्दी अनुवाद में वैस्टर्न टैक्स्ट की झलक मिलती है और लिखा है, ''लोग अवश्य सुनेंगे...'' कई लोग यहां पर ''लोग'' का अर्थ जनसमूह से लेते हैं, परन्तु संदर्भ से संकेत मिलता है कि प्राचीनों को मसीही यहूदियों की चिन्ता थी। [27]''प्रेरितों के काम, भाग-4'' के पाठ ''परिवार की तस्वीर'' में प्रेरितों 20:7 पर नोट्स देखिए। [28]उन्होंने निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले मामले पर पौलुस तथा वहां उपस्थित अन्य लोगों के साथ विचार-विमर्श तो किया होगा। [29]यूनानी में क्रिया आदेशात्मक भाव में है। [30]यह भी सम्भव है कि उन चार लोगों को सभा में प्राचीन ही लाए हों (आयत 26)।

[31]इस अवसर की तुलना 18:18 में उल्लिखित पौलुस की मन्नत के साथ कीजिए। गिनती 6:18 के अनुसार मन्नत के आरम्भ में नहीं, बल्कि अन्त में सिर मुंडाया जाता था; सिर मुण्डाना केवल बलि देने के स्थान पर ही किया जाता था, किसी दूसरे स्थान पर नहीं। उन चार लोगों की मन्नत निश्चित रूप से नाज़ीरी मन्नत लगती है, जबकि पौलुस की मन्नत अभी भी उलझाने वाली है। [32]दो लोग जो जीवन भर नाज़ीरी मन्नत के अधीन रहे, वे समसून तथा यूहन्ना बपस्तिमा देने वाले थे। [33]पौलुस लगभग टूट चुका था इसलिए लेखक अपने आपको अनुचित रूप से परेशान करते हैं कि पौलुस ने उनका ''खर्चा देने के लिए'' धन कहां से लिया। कई लोगों ने सुझाव दिया है कि प्राचीनों ने पौलुस से संतों (मसीही लोगों) के लिए इकट्ठे हुए चंदे में से कुछ खर्च कर लेने के लिए कहा, परन्तु यह तो चन्दे के पैसों का दुरुपयोग होगा और मैं नहीं मानता कि पौलुस मान गया होगा (2 कुरिन्थियों 8:20, 21)। बाद में रोम में दो वर्ष तक भाड़े के घर में रहने के लिए पौलुस के पास धन था (प्रेरितों 28:30), इसलिए कई लोग अनुमान लगाते हैं कि पौलुस ने इसी समय के दौरान यह धन प्राप्त किया था। इस बात का अधिक महत्व नहीं है। सम्भवत:, पौलुस को धन वहीं से मिला होगा जहां से सामान्यत: मिलता था अर्थात हाथों से काम करके या करुणामय भाइयों से। [34]विधिवत रूप से धोने के लिए, देखिए लैव्यव्यवस्था 15:1-30. इसका कोई संकेत नहीं है कि पौलुस ने उन पुरुषों के साथ नाज़ीरी मन्नत पूरी की, और न ही यह संकेत है कि वह वर्षों पूर्व मानी गई किसी मन्नत को पूरा कर रहा था (18:18)। आमतौर पर, यहूदी लोग अन्यजातियों के देशों से लौटने पर, औपचारिक रूप से धोने की प्रक्रिया से गुज़रते थे। शायद पौलुस के शुद्धीकरण में भी ऐसा ही कुछ था। शायद मंदिर में जाने और याजकों के साथ प्रबन्ध करने के लिए ऐसी प्रक्रिया आवश्यक थी। [35]जैसा कि आमतौर पर होता है, लूका ने घटनाओं को संक्षिप्त कर दिया, अत: हम ठीक-ठीक नहीं कह सकते कि वहां क्या हुआ। लूका का उद्देश्य उन चार लोगों की मन्नत का विवरण देना नहीं, बल्कि यह बताना था कि पौलुस जेल में कैसे गया? [36]पतरस के इस कथन के समय याकूब वहां उपस्थित था (15:13); और हमारे इस पाठ की आयत 25 में, प्राचीनों ने अपना परिचय उन लोगों के साथ करवाया जिन्होंने प्ररितों 15 की सभा की ओर से पत्र लिखवाया था। [37]''प्रेरितों के काम, भाग-3'' के पाठ ''विवाद निपटाने के लिए और सुझाव'' में प्रेरितों 15:20 पर नोट्स देखिए। [38]अगले पाठ में ''यहूदी धर्म की विलक्षणता'' पर नोट्स देखिए। [39]अगले कुछ पाठों में, हम यरूशलेम में यहूदियों तथा उनके अगुओं के लिए पौलुस के प्रवचनों को देखेंगे जिनसे उनका क्रोध भड़क गया। स्पष्टतया, उन्होंने इस प्रकार का प्रचार यरूशलेम में रहने वाले यहूदी मसीहियों से कभी नहीं सुना था। [40]1 कुरिन्थियों 9:20

[41]ऐसा लगता है कि वे लोग सभा में उपस्थित थे, या कम से कम अपना ''सुझाव'' देने के समय प्राचीन उन्हें लेकर आए थे। [42]''मंदिर'' शब्द यहां यरूशलेम के मंदिर के पवित्र भाग के लिए प्रयुक्त हुआ है, केवल मंदिर के प्रांगण के लिए नहीं जिसमें अन्यजातियों का आंगन भी शामिल था। पृष्ठ 42 पर मंदिर का रेखाचित्र देखिए। [43]औपचारिक रूप से धोने में जो बातें शामिल थीं उन्हें फिर से देखने के लिए लैव्यव्यवस्था 15:1-30 देखिए। [44]आसिया के यहूदी पौलुस को सात दिन के समय तक ले आए थे, इसलिए यरूशलेम में मसीहियों का सप्ताह के पहले दिन इकट्ठा होना पौलुस के प्राचीनों के साथ मिलने और उसे बंदी बनाकर ले जाने के समय के दौरान ही हुआ होगा। उस सभा में क्या हुआ? क्या यह शोर-गुल ही था या उसमें कोई तर्क भी था? हम जानना चाहेंगे, परन्तु फिर कहता हूं, लूका का उद्देश्य हमारी जिज्ञासा को तृप्त करना नहीं था।